शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनसंचार की ग्रामीण जीवन में उपयोगिता

सुनीता शर्मा (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

जनसंचार ग्रामीणों को कृषि सम्बंधित विषयों की जानकारी देने के साथ साथ, ग्रामीणों में शिक्षा एवं वैज्ञानिक चेतना के प्रसार का सशक्त माध्यम भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जनसंचार के प्रभाव पर विचार किया गया है।

भूमिका

आधुनिक काल में 'जनसंचार' अत्यधिक प्रचलित शब्द है। यह दो शब्दों के योग से बना है, जन+संचार। जन का अर्थ है समूह। समूह संचार का वृहद् रूप है जनसंचार। जनसंचार से तात्पर्य समाज के एक विशाल जन समूह द्वारा अपने विचारों, भावनाओं और सूचनाओं का अखबार, रेडियो, टेलीफोन, दूरदर्शन और अंतर्जाल आदि के माध्यम से किया गया अप्रत्यक्ष संवाद है। बार्कर के शब्दो में, "जनसंचार श्रोताओं के लिए अपेक्षाकृत कम खर्च में पुनरूत्पादन तथा वितरण के विभिन्न साधनों का इस्तेमाल करके किसी संदेश को व्यापक लोगों तक, दूर-दूर तक फैले हुए श्रोताओं तक, रेड़ियो, टेलीविजन, समाचार पत्र जैसे किसी चैनल द्वारा पहुंचाया जाना है।" जनसंचार में 'संचार' शब्द संस्कृत की 'चर' धातु से बना है, जिसका अर्थ है चलना। जनसंचार का सर्वप्रथम प्रयोग उन्नीसवी सदी के तीसरे दशक के अंतिम दौर में संदेश सम्प्रेषण के लिए किया गया था। जैसे-जैसे समाचार पत्र, रेडिओ, दूरदर्शन और अन्तर्जाल का प्रयोग बढ़ता गया, वैसे-वैसे जनसंचार के क्षेत्र का विस्तार होता गया। विकीपिडिया ने जनसंचार को परिभाषित करते हुए लिखा है, "जनसंचार से तात्पर्य उन सभी साधनों के अध्ययन एवं विश्लेषण से है जो एक साथ बहुत बड़ी जनसंख्या के साथ संचार संबंध स्थापित करने में सहायक होते हैं। प्रायः इसका अर्थ सम्मिलित रूप से समाचार पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन, चलचित्र से लिया जाता है जो समाचार एवं विज्ञापन दोनों के प्रसारण के लिए प्रयुक्त होते हैं।"

जनसंचार का महत्त्व

मानव जीवन में जनसंचार का बहुत महत्व है। इसके बिना व्यक्ति अपने विचारों, भावों, तथा सूचनाओं को दूसरों के सामने व्यक्त नहीं कर पाता तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण नहीं कर पाता। इसके बिना व्यक्ति का व्यक्ति से, समाज से कोई सम्पर्क नहीं बन सकता। बिना संपर्क के मानव जीवन अवरूद्ध हो जाता है। चारों तरफ रिक्तता व्याप्त हो जाती है। इसलिए जनसंचार की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। समाज और मनुष्य के विकास के लिए जनसंचार से असीम संभावनाएं और अपेक्षायें हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्राचीन काल में जनसंचार के साधन अल्प मात्रा में थे। भारतीय इतिहास के पन्ने पलटने पर यह ज्ञात होता है कि तत्काल में जब किसी को कोई समाचार जनसाधारण तक पहुंचाना होता था, तो वे लोग गांव के चौक पर ढोलक लेकर खड़े हो जाते थे और जब सारे गांव वाले इकट्ठे हो जाते थे तब वे समाचार की घोषणा करते थे। राजा विक्रमादित्य, अशोक तथा हर्षवर्धन के काल में जनमत जानने के लिए गुप्तचर व्यवस्था थी। ये लोग अपने विचारों को शिलाखण्डों, प्रस्तर मूर्तियों, भोजपत्रों तथा ताम्रपत्रों आदि पर अंकित कराकर जनसाधारण के मध्य प्रसारित करते थे। राज्यादेशों की मुनादी भी करवाई जाती थी। ब्रिटिशकाल तक आते-आते जनसंचार के साधन प्राचीनकाल की अपेक्षा विकसित अवस्था में थे। तत्काल में गुप्तचर व्यवस्था के साथ-साथ डाक व्यवस्था भी सर्वसाधारण में प्रचलित हो चुकी थी।

आधुनिक काल में जनसंचार के साधन पूर्णतः विकसित हो गए हैं। पुरा काल में जहां वाहनदूत, हरकारे, गुप्तचर व्यवस्था तथा डाक प्रणाली जनसंचार के प्रमुख साधन होते थे, वहां आधुनिक काल में समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो टेलीफोन, दूरदर्शन तथा अन्तर्जाल आदि ने जनजीवन में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। जनसंपर्क की दृष्टि से देश-विदेश में इन साधनों का भरपूर उपयोग किया जाता है। जनसंचार के इन सब साधनों में समाचर पत्र जनसंपर्क के लिए सर्वोत्तम माध्यम है। इंग्लैंड, जर्मनी, रूस, जापान, अमेरिका तथा अन्य कई देशों में जनसाधारण से संबंध स्थापित करने के लिए समाचार पत्रों का प्रयोग किया जाता है। इन देशों में समाचार पत्रों की बिक्री लाखों में है। विश्व के किसी भी कोने में अगर कोई घटना घटती है तो जनसंचार के साधनों की अतितीव्रता के कारण वह घटना क्षण में ही संपूर्ण विश्व में प्रसारित हो जाती है। अंतर्जाल के माध्यम से ई-मेल, फेसबुक तथा ट्वीटर के जरिये संदेश पलक झपकते ही विश्व के किसी भी कोने में भेजे जा सकते हैं। जनसंचार का सबसे नवीन एवं लोकप्रिय साधन मोबाईल है। इसके द्वारा बातचीत के दौरान एक दूसरे को देखना भी संभव हो गया है। मोबाईल में वाट्सएप तथा स्काईप ऐसे वैशिष्ट्य हैं जिसके द्वारा दृश्य-श्रव्य संदेश क्षण में ही पहुंच जाते हैं। यह सब आधुनिक जनसंचार के क्रान्तिकारी परिवर्तनों का ही परिणाम है।

जनसंचार की ग्रामीण जीवन में उपयोगिता

भारतवर्ष प्रधानतः गांवों का देश है। यहां की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों मे निवास करती है। कृषि, पशुपालन तथा कुटीर उद्योग ग्रामीण जनसाधारण की आजीविका के साधन हैं। गांवों के विकास के साथ ही देश का विकास संभव है। गांधी जी ने कहा था-असली भारत गांवों में बसता है। ग्रामीण जनजीवन के विकास में जनसंचार के साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से देश-विदेश, राजनीति, बाजार, खेल तथा सिनेमा से संबंधित जानकारी ग्रामीणों तक पहुंच रही है। इन साधनों द्वारा समाज में पर्दा-प्रथा, बालविवाह तथा भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों की ओर जनसामान्य का ध्यान आकृष्ट होता है जिसके फलस्वरूप इन कुरीतियों को समाप्त करने के प्रयास किए जाते हैं। 'विज्ञान प्रगति' जैसी पत्रिकाओं का वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने में अतुलनीय योगदान रहा है। कृषि पर आश्रित रहने वाले ग्रामीणों के लिए रेडियो पर प्रसारित किए जाने वाले 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम के द्वारा फसलों से संबंधित दिए जाने वाले अनेक सुझाव

एवं विचार उनके पथ-प्रदर्शक का कार्य करते हैं, जिनके अनुसरण से वे कृषि की उत्पादकता बढ़ाते हैं। दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों के द्वारा वे अंधविश्वास को त्यागकर विज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं। टी.बी., पोलियो और एड्स जैसी भयंकर बीमारियों के विज्ञापनों के माध्यम से जनसाधारण को इनके निदान के उपाय सुझाये जाते हैं, जिससे जनता अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत होती है।

ग्रामीण जनजीवन में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में जनसंचार के साधनों का अतुलनीय योगदान है। आज स्कूल, कॉलेज और शिक्षक के बिना भी शिक्षा ग्रहण करना संभव हो गया है। अन्तर्जाल के माध्यम से कुछ संस्थाओं ने आन लाइन शिक्षा सेवा शुरू की है, जिसके द्वारा वे व्यक्ति जिनके पास पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण समय का अभाव है, वे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। जनसंचार के माध्यम से ग्रामीणों को केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी प्राप्त होती है। जिससे इन योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन किया जाता है। इंदिरा आवास योजना, स्वरोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, राष्ट्रीय ग्रामणी रोजगार गारंटी अधिनियम और मनरेगा आदि ऐसी योजनायें हैं, जिनका भरपूर लाभ ग्रामीणों को मिलता है।

निष्कर्ष

ग्रामीण विकास के संदर्भ में इन जनसंचार के माध्यमों से अनेक संभावनाएं अभिव्यक्त होती हैं। इनके द्वारा ग्रामीण समाज को परम्परा से प्रगति की ओर मोड़कर ग्रामीण विकास कार्यक्रम को उचित दिशा दी जा सकती हैं। जनसंचार के माध्यम ग्रामीण समाज के सम्मुख नये जीवन का विकल्प प्रस्तुत कर उन्हें जड़ता का मार्ग छोड़कर सक्रियता की राह अपनाने की प्रेरणा दे सकते हैं। ग्रामीण विकास के लिए कृषि से संबंधित विचारों को प्रयोगशाला से कृषकों के खेतों तक पहुंचाने के लिए जरूरी है कि इन संचार साधनों को उत्तम दिशा दी जाए। सामुदायिक विकास योजना एवं राष्ट्रीय प्रसार सेवा के माध्यम से नवीन कृषि तकनीकों के सम्प्रेषण का कार्य आज कृषकों के मध्य किया जा रहा है, जिसके परिणाम अवश्य ही लाभकारी सिद्ध होंगे। जनसंचार का कार्य ऐसा होना चाहिए जिससे समाज को बेहतर दिशा मिले ओर लोग विकास कर सकें। विश्व की संपूर्ण संस्कृति को प्रचारित करने तथा तदानुसार व्यक्ति को समायोजित करने में जनसंचार के माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. विष्णु राजगढ़िया, जनसंचार सिद्धान्त और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (2008)

2. डॉ.धमेन्द्र प्रताप सिंह, इक्कीसवी सदी में जनसंचार माध्यम की चुनौतियां , ई-पत्रिका 'अपनी माटी' , वर्ष-2 अंक-17, जनवरी-मार्च 2015

3. डॉ. अमर बहादुर सिंह, भारत में जनसंचार का इतिहास , अमर पब्लिकेशन, वाराणसी (2002)